ॐ तत्सत्

प्रेस-विज्ञप्ति

श्री सर्वेश्वरी समूह

गुरुपूर्णिमा महोत्सव वर्ष २०१४

एवं

अखिल भारतीय ५३ वाँ वार्षिक अधिवेशन

परमपूज्य अघोरश्वर भगवान राम जी
संस्थापक अध्यक्ष श्री सर्वेश्वरी समूह,
बाबा भगवान राम ट्रस्ट व
अघोर परिषद ट्रस्ट

पूज्य गुरुपद संभव राम जी
अध्यक्ष श्री सर्वेश्वरी समूह,
बाबा भगवान राम ट्रस्ट व
अघोर परिषद ट्रस्ट

प्रधान कार्यालय :

श्री सर्वेश्वरी समूह संस्थान देवस्थानम्

अवधूत भगवान राम कुष्ठ सेवा आश्रम, पड़ाव, वाराणसी

संस्था की पाक्षिक पत्रिका :

सर्वेश्वरी टाइम्स

संस्था स्वरूप :

विशुद्ध आध्यात्मिक तथा सामाजिक

ॐ तत्सत्

गुरुपूर्णिमा महोत्सव २०१४
श्री सर्वेश्वरी समूह- अघोर विचार दर्शन

जनसेवा, वसुधैव कुटुम्बकम् तथा सर्वधर्म समन्वय के उद्देश्य से परमपूज्य अघोरेश्वर भगवान राम जी द्वारा सन् १९६१ में स्थापित श्री सर्वेश्वरी समूह लोक कल्याण की अनुपम संस्था है। श्री सर्वेश्वरी समूह की विचारधारा से प्रेरित हो सर्वेश्वरी सैनिक, संस्था के अनेकानेक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों के उन्मूलन में लगे हुए हैं। फिजूलखर्ची एवं आडम्बर से बचने के लिये अघोरेश्वर महाप्रभु द्वारा प्रतिपादित सर्वेश्वरी विवाह पद्धति तथा अन्त्येष्टि क्रिया लोकप्रिय होती जा रही है। कुष्ठ रोगियों की सेवा हेतु यह संस्था पूर्व से ही विश्वविख्यात है। नशाखोरी, छुआछूत एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण करने हेतु समूह स्वयंसेवक अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से सुदूर क्षेत्रों में भी जाकर परमपूज्य अघोरेश्वर के विचार दर्शन का प्रचार-प्रसार करते हैं। सर्वेश्वरी समूह अपने ग्रन्थों, पत्रिकाओं, गोष्ठियों एवं सभाओं के आयोजन द्वारा राष्ट्रप्रेम एवं विश्वबन्धुत्व का विचार प्रस्तुत कर मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत व्यवहारिकता का ज्ञान देकर जात-पाँत, धर्म-मजहब आदि संकीर्णताओं से ऊपर उठाकर एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रहा है। आज की शिक्षण संस्थायें भी भारतीय संस्कारों से रहित पश्चिमी सभ्यता से प्रेरित शिक्षा बालकों एवं युवाओं को प्रदान कर रही हैं। परमपूज्य अघोरेश्वर महाप्रभु ने कहा है– ''राष्ट्र का प्राण राष्ट्र की भाषा ही होती है।'' इस संदर्भ में परम पूज्य अघोरेश्वर महाप्रभु ने कहा है–

''सुधर्मा ! शिक्षण संस्थाओं से लेकर प्रशासकीय व्यवस्था तक सर्वत्र घुटन का वातावरण व्याप्त है। अब भविष्य ही बतलायेगा कि क्या महाभारत के काल की याद फिर ताजा होगी। यदि ऐसा हुआ, यदि वर्तमान विषमता बनी रही तो चाहे कोई भी राष्ट्र हो, देश हो, संस्कृति हो, जान-बूझकर उसका विषपान करनेवालों की मृत्यु ही निश्चितप्राय है। वह विष मनुष्य-बीजों, मनुष्य-प्राणियों को विकृत एवं विकलांग बना देगा। उनका तेज, कांति, बल और पौरुष सबकुछ लूट लेगा। सुधर्मा! जम्हाई मत लो। कार्य करो, जन-जागरण करो। जहाँतक तुम्हारी आवाज जा सके, वहाँतक मनुष्य-प्राणियों का आह्वान कर यह सन्देश उच्च स्वर से चिल्ला-चिल्लाकर निश्चित रूप से सुनाओ। मानव की आकृति में ही दीख रहे उनलोगों से जन सामान्य को सावधान करो जो श्वानों, मच्छरों एवं मक्खियों की नाईं मानव-प्राणियों के शोणित का पान करने और उनका शोषण करने में जुटे हैं, चाहे वे अफसर हों या अफसराएँ हों, उन्हें बतलाओ कि वे यदि इन विसंगतियों एवं पापाचारियों से मुक्त होना चाहते हैं तो उस शाश्वत, उस अज्ञात के चरणों में प्रार्थना करें एवं गुरुजनों तथा औघड़-अघोरेश्वरों से सीख लें और मार्ग प्राप्त करें। उन्हें इंगित कर समझाओ कि मानवता का दम्भ भरनेवाले उन नरभक्षी पदाधिकारियों पर दृष्टिपात करें और देखें कि अपने को समाज का पोषक और जनसेवक घोषित करनेवाले ये लोग कितने घृणित और अपायगामी कृत्यों में संलग्न हैं। सुधर्मा! पराप्रकृति इन्हें क्षमा नहीं करेगी। इनमें से बहुत-से लोग अपने को ईश्वर के समान समझते हैं। सुधर्मा! ईश्वर हों या ईश्वर के प्रतिनिधि, भगवान हों या भगवान के प्रतिनिधि हों या भगवान और भगवती की युगल जोड़ी हो, कोई भी हो, कर्मों ने इन्हें कभी भी नहीं छोड़ा है, कभी भी नहीं छोड़ेगा। इसीलिये कहा गया है कि उत्तम कर्म प्रधान होता है, अपनी संस्कृति और सभ्यता का पोषक होता है और मानव प्राणियों को केवल मार्गदर्शन ही नहीं प्रदान करता है, बल्कि उन्हें इसकी दृष्टि भी देता है। सुधर्मा! अपना ही कर्म कुकृत्य, कुविचार, अव्यवहार, अनीति और दुरनिमित्त को भी जन्म देता है। ऐसी सभी विकृतियों, विषमताओं एवं विसंगतियों को जन्म देनेवाले लोग भी मनुष्य की शक्ल में ही पाये जाते हैं।''

राष्ट्र की एकता, अखण्डता तथा सम्प्रभुता को बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि वर्तमान युवा पीढ़ी सर्वेश्वरी विचार धारा से ओत-प्रोत हो। गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व पर माँ सर्वेश्वरी से प्रार्थना है कि हम सबमें उस शक्ति का संचार होता रहे जिससे हम राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए जनसेवा को अपना धर्म समझें, ईश्वर की सेवा समझें।

*

श्री सर्वेश्वरी समूह द्वारा वर्ष २०१३-२०१४ में किये गये जनसेवा कार्यक्रमों का विवरण

श्री सर्वेश्वरी समूह ने वर्ष २०१३-१४ में ४५,११३ लोगों को निःशुल्क चिकित्सा सेवा प्रदान की।

अवधूत भगवान राम कुष्ठ सेवा आश्रम में इस वर्ष ६०३६ मरीजों का पंजीयन किया गया, जिसमें महाकुष्ठ एवं क्षुद्र कुष्ठ के २४९४ एवं अन्य रोगों के ३५४२ रोगियों की चिकित्सा की गयी।

समूह की विभिन्न शाखाओं ने १८ निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जिसमें २७७८ मरीजों का नेत्र परीक्षण हुआ और १३१३ मरीजों के मोतियाबिन्द का आपरेशन कर लेन्स प्रत्यारोपित किया गया। इस दौरान मरीजों और उनके सहयोगियों को लाने व ले जाने तथा भोजन आदि की व्यवस्था भी समूह द्वारा की गयी। प्रधान कार्यालय वाराणसी स्थित अस्पताल में मोतियाबिन्द के कुल ६६६ मरीजों का पंजीयन कर ५१५ मरीजों को लेन्स प्रत्यारोपित किया गया। संस्था द्वारा १०७४ मिर्गी के रोगियों का फकीरी एवं होमियोपैथी पद्धति से उपचार किया गया। प्रधान कार्यालय द्वारा १२० मरीजों को दंत चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई। समूह ने ३० निःशुल्क एलोपैथिक चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जिसमें २०३७९ रोगियों का परीक्षण कर औषधि प्रदान की गई।

प्रधान कार्यालय वाराणसी और समूह शाखाओं ने होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति से वर्ष के दौरान ७६३३ मरीजों का इलाज किया। पिछले गुरुपूर्णिमा पर्व पर प्रधान कार्यालय में १७६० मरीजों को चिकित्सा सेवा भी प्रदान की गयी। शाखा हण्डौर प्रतापगढ़ ने ३०३६ लोगों के बीच डेंगू प्रतिरोधी होमियोपैथी दवा पिलायी। शाखा अम्बिकापुर (छ०ग०), शाखा गढ़वा (झार०) एवं शाखा रायबरेली (उ०प्र०) द्वारा आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर के माध्यम से ३४० रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा की गयी। समूह शाखा रायबरेली द्वारा ३५ मरीजों के गोखरू की चिकित्सा की गई। इसी शाखा द्वारा प्रत्येक रविवार केा आयोजित किये जाने वाले पथरी चिकित्सा शिविर में कुल १८५९ मरीजों को दवा प्रदान किया गया। शाखा प्रयाग के सहयोग से आयोजित चिकित्सा शिविर में ५० विकलांग मरीजों की चिकित्सा की गई जिनमें से १६ मरीजों को ट्राई साइकिल भी वितरित किया गया।

समूह की विभिन्न शाखाओं ने ११ चिकित्सा शिविरों का आयोजन कर नेत्र के कुल १०८५ मरीजों को निःशुल्क पॉवर वाले चश्मे भी वितरित किये। शाखा अम्बिकापुर (छ०ग०) के परिसर में आश्रम के सहयोग से पाँच दिवसीय निःशुल्क ऑस्टियोपैथी शिविर का आयोजन कर १४७८ रोगियों का इलाज किया। इसमें विश्व प्रसिद्ध ऑस्टियोपैथ डॉ० गोवर्धन लाल पराशर एवं उनके सहयोगियों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। इसी शाखा ने एक निःशुल्क मैग्नेटिक थेरेपी शिविर का आयोजन भी किया जिसमें ३४५ रोगियों का सफल उपचार हुआ। इस शिविर में दमा, उच्च रक्तचाप एवं अवसाद के मरीज विशेषतः लाभान्वित हुए। शाखा जमशेदपुर ने रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया।

विभिन्न रोगों से बचाव के लिये शाखा हण्डौर प्रतापगढ़ ने मलीन बस्तियों में समय-समय पर कीटनाशक दवाओं का छिड़काव कराया। वहीं रेणुकूट शाखा ने मच्छरदानी वितरण का कार्य किया।

समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, नशाखोरी, दहेज इत्यादि कुव्यवस्थाओं के उन्मूलन हेतु समूह की विभिन्न शाखाओं ने ६ साइकिल यात्राओं का आयोजन किया। हजारों किमी की इस यात्रा के दौरान स्थान-स्थान पर गोष्ठियों का आयोजन कर अघोर-साहित्य का वितरण एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम के साथ ही स्थानीय लोगों को सर्वेश्वरी समूह के उद्देश्यों एवं जनकल्याणकारी कार्यक्रमों की जानकारी दी गई।

तिलक-दहेज तथा दिखावा एवं अपव्यय से बचने के लिए सर्वेश्वरी पद्धति से प्रधान कार्यालय वाराणसी एवं इसकी शाखाओं में सैकड़ों विवाह सम्पन्न किये गये।

निर्धन छात्रों को शिक्षा प्रदान करने हेतु समूह के विभिन्न शाखाओं पर उन्हें रखकर आश्रम द्वारा समस्त व्यवस्था की गई। इसके अलावा समूह की विभिन्न शाखाओं ने भीषण गर्मी को देखते हुये प्याऊ की व्यवस्था की और पर्यावरण की रक्षा

हेतु वृहद् पैमाने पर वृक्षारोपण का कार्य भी किया।

जरूरतमंद लोगों के बीच वस्त्र, कम्बल एवं ऊनी वस्त्रों का वितरण करने के साथ-साथ समूह शाखाओं ने ठण्ड में अलाव की भी व्यवस्था की।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक जनचेतना हेतु शाखाओं ने गोष्ठियों का आयोजन कर अघोर-साहित्य का वितरण किया। साथ ही निबन्ध प्रतियोगिता एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर छात्र/छात्राओं के बीच कॉपी, कलम आदि भी वितरित किये गये।

उल्लेखनीय है कि अवधूत भगवान राम नर्सरी विद्यालय, पड़ाव, वाराणसी की कक्षा पाँच की छात्रा कुमारी रत्ना ने गत् वर्ष ८ नवम्बर २०१३ को रेवाड़ी हरियाणा के प्री जूनियर ग्रुप में तथा ३०-३१ दिसम्बर २०१३ को ताल कटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित ताइक्वांडो चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक प्राप्त कर संस्था एवं प्रान्त का मान बढ़ाया। संस्था अध्यक्ष पूज्यपाद बाबा गुरुपद संभव राम जी ने कु० रत्ना प्रोत्साहन राशि देकर पुरस्कृत किया।

समूह की शाखाओं ने भारतीय संस्कृति के रक्षार्थ ग्रामवासियों के बीच ग्रामदेवी एवं ग्राम देवता का पूजन-हवन कराया और इसके महत्व से ग्रामीण जनता को अवगत कराया।

शाखाओं ने मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा एवं अन्य देवालयों में झाड़ू वितरण भी किया।

प्रधान कार्यालय पड़ाव, वाराणसी सहित दूसरी शाखाओं ने अपने-अपने जिलों के सरकारी अस्पतालों एवं कुष्ठी बन्धुओं के बीच फल, दूध, पावरोटी, पंखा एवं वस्त्र आदि का वितरण किया।

शाखा प्रयाग ने बाढ़ पीड़ितों में खाद्य एवं अन्य आवश्यक सामग्रियों का वितरण किया।

गत् वर्ष उत्तराखण्ड में आयी भीषण आपदा में पीड़ित लोगों के सहायतार्थ प्रधान कार्यालय द्वारा द्वारा दो बड़े ट्रकों में भरकर तिरपाल, कम्बल, विंड चीटर, रेनकोट, थर्मल इनर, टी शर्ट, साड़ी, छाता, चप्पल, एल ई डी लालटेन, माचिस, प्रोटीन पाउडर, बिस्किट व जीवन रक्षक दवाइयाँ भेजी गईं। ये राहत सामग्रियाँ उन दुर्गम इलाकों में पहुँचाई गईं जहाँ अन्य संस्थायें समुचित राहत सामग्री पहुँचाने में असमर्थ रहीं। पिथौरागढ़ तहसील के धारचुला एवं मुंश्यारी के सुदूर ग्रामीण इलाकों में ये राहत सामग्रियाँ संस्था के स्वयंसेवकों ने खुद वितरित कीं।

संस्था द्वारा गो-सेवा का कार्य विशेष तौर पर संचालित किया जा रहा है।

प्रधान कार्यालय सहित समूह की शाखाओं ने हजारों की संख्या में वृक्षारोपण किया।

ये बताना जरूरी है कि पूज्यपाद बाबा गुरुपद संभव राम जी के प्रयास से बाबा भगवान राम ट्रस्ट के प्रधान कार्यालय ब्रह्मनिष्ठालय सोगड़ा में पिछले चार सालों से हो रही चाय की खेती छत्तीसगढ़ एवं अन्य प्रान्तों के लिए अनुकरणीय है। यहाँ उत्पादित चाय को राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय चाय विशेषज्ञों एवं माननीय मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ ने भी विश्व स्तरीय माना है। प्रतिवर्ष इस चाय की खेती का विस्तार हो रहा है। आश्रम द्वारा बनायी जा रही ग्रीन टी में उपलब्ध एन्टी ऑक्सीडेंट तत्त्व शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और नाना प्रकार के रोगों से रक्षा करता है। चाय की यह खेती रोजगार के अवसर प्रदान करने के साथ-साथ क्षेत्र की आर्थिक स्थिति में सुधार व पर्यावरण की रक्षा में भी सक्षम है। इससे स्थानीय आदिवासी बन्धुओं का रोजगार हेतु सुदूर प्रान्तों में पलायन भी नियंत्रित होगा।

इसके अलावा समूह लगातार जन कल्याणकारी कार्यक्रम कराता रहता है।

*